International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 25-28

उच्चशिक्षा में भाषा का प्रश्न

शिवांगी
एम.फिल. शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत ।

सारांश
एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने विचारों और भावों को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। समाज में रहते हुए प्रत्येक मनुष्य अपने विचारों, भावों, इच्छाओं व आवश्यकताओं को दूसरों तक सम्प्रेषित करने के लिए जिस माध्यम का सहारा लेता है वह भाषा ही है। भाषा ही मनुष्य को ईश्वर की वह अद्भुत देन है जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने विचारों एवं भावों को दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत करता है बल्कि अपने आसपास के वातावरण से जुडने व ज्ञान ग्रहण करने में भी भाषा महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बहुभाषिकता व द्विभाषिकता आज के युग का प्रमुख लक्षण है और भारत के सन्दर्भ में भाषा की स्थिति और भी विशिष्ट है। एक बहुभाषी देश होने के नाते हमारे देश में लोगों के द्वारा घर, पडोस, व्यापार व शिक्षा में अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। आज हमें सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक व भाषाई रूप से भिन्न समूह प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में भारत जैसे बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश में भाषाई विविधता एवं शिक्षा के सम्बन्ध को समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। 2011 के आँकड़ों के अनुसार भारत में 1.2 अरब लोगों में से 97 प्रतिशत लोग 22 अनुसूचित भाषाओं में किसी एक भाषा का प्रयोग करते हैं वहीं 3 प्रतिशत लोग 92 भाषाओं का प्रयोग अपनी मातृभाषा के रूप में करते हैं। इन भाषाओं में से केवल 41 भाषाएँ विद्यालय स्तर पर प्राथमिक, द्वितीय व तृतीय भाषा के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। इन 41 भाषाओं में से केवल 18 भाषाओं को विश्वविद्यालय स्तर पर अनुदेशन के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। जिससे स्पष्ट होता है कि उच्चस्तरीय शिक्षा में अन्य भाषा का प्रयोग करने वाले छात्रों को अवश्य ही समस्या का सामना करना पड़ता है। अतः इस शोध पत्र में उच्चशिक्षा के माध्यम से सम्बन्धित चुनौतियों एवं कठिनाइयों को समझने का प्रयास किया गया और पाया गया कि उपरोक्त विषय पर अलग-अलग कमीशन, रिपोर्ट व शिक्षाविदों के विचार जानने के बाद कहा जा सकता है कि शिक्षा में भाषा व माध्यम का मुद्दा आजादी से पूर्व व बाद में हमारे यहां का प्रमुख रहा है, जिसको समझने व सुलझाने के लिए अलग-अलग कमीशन, कमेटी व लोगों ने अलग-अलग समय पर अपने विचार प्रस्तुत किये है लेकिन भारत जैसे बहुभाषी देश में इसका कोई निश्चित हल ढूंढना आसान कार्य नहीं है।

मूल शब्द: उच्चशिक्षा, सामाज, सांस्कृतिक, धार्मिक

प्रस्तावना

भारतीय संदर्भों में भाषा की स्थिति

एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने विचारों और भावों को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। समाज में रहते हुए प्रत्येक मनुष्य अपने विचारों, भावों, इच्छाओं व आवश्यकताओं को दूसरों तक सम्प्रेषित करने के लिए जिस माध्यम का सहारा लेता है वह भाषा ही है। भाषा ही मनुष्य को ईश्वर की वह अद्भुत देन है जो उसे अन्य प्राणियों से

अलग करती है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने विचारों एवं भावों को दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत करता है बल्कि अपने आसपास के वातावरण से जुडने व ज्ञान ग्रहण करने में भी भाषा महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बहुभाषिकता व द्विभाषिकता आज के युग का प्रमुख लक्षण है और भारत के सन्दर्भ में भाषा की स्थिति और भी विशिष्ट है। एक बहुभाषी देश होने के नाते हमारे देश में लोगों के द्वारा घर, पडोस, व्यापार व शिक्षा में अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। आज हमें सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक व भाषाई रूप से भिन्न समूह प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में भारत जैसे बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश में भाषाई विविधता एवं शिक्षा के सम्बन्ध को समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। 2011 के आँकड़ों के अनुसार भारत में 1.2 अरब लोगों में से 97 प्रतिशत लोग 22 अनुसूचित भाषाओं में किसी एक भाषा का प्रयोग करते हैं वहीं 3 प्रतिशत लोग 92 भाषाओं का प्रयोग अपनी मातृभाषा के रूप में करते हैं। इन भाषाओं में से केवल 41 भाषाएँ विद्यालय स्तर पर प्राथमिक, द्वितीय व तृतीय भाषा के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। इन 41 भाषाओं में से केवल 18 भाषाओं को विश्वविद्यालय स्तर पर अनुदेशन के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। जिससे स्पष्ट होता है कि उच्चस्तरीय शिक्षा में अन्य भाषा का प्रयोग करने वाले छात्रों को अवश्य ही समस्या का सामना करना पड़ता है। अतः इस शोध पत्र में उच्चशिक्षा के माध्यम से सम्बन्धित चुनौतियों एवं कठिनाइयों को समझने का प्रयास किया गया और पाया गया ।

शिक्षा में भाषा एवं समझ का सम्बन्ध

जीवन के सभी क्षेत्रों में शाब्दिक एवं मौखिक भाषा एवं सम्प्रेषण कौशलों का महत्त्पूर्ण स्थान होता है। मानव जीवन के ऐसे अनेक संदर्भ होते है जहाँ उपयुक्त अन्तक्रिया एवं सम्प्रेषण कौशल के अभाव में सम्पूर्ण संवाद के तर्कहीन एवं अर्थहीन होने की संभावना अत्यधिक होती है शिक्षा भी ऐसा ही संदर्भ है जहाँ समुचित सम्प्रेषण कौशलों के अभाव में समस्त शैक्षणिक प्रक्रिया के निरर्थक होने की संभावना बढ़ जाती है। शैक्षिक प्रक्रिया में भाषा को ज्ञान निर्माण व सृजन से अलग नहीं किया जा सकता है क्योंकि शैक्षिक संदर्भों में भाषा केवल अपने विचारों एवं भावों को प्रकट एवं व्यक्त करने का माध्यम ही नहीं है इसका समझ के साथ भी अटूट रिश्ता होता है। ''समझ और भाषा का रिश्ता कुछ ऐसा होता है जैसे हवा और उसकी तरंगों का। हमारी समझ अपनी भाषा में ही बनती है और भाषा के बिना समझ की परिकल्पना असम्भव है।'' (समझ का माध्यम, 2010, पृ. 11)

भाषा ही वह शक्ति है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करती है व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने मंे और उसकी क्षमताओं के विकास में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपनी रूचियों, क्षमताओं एवं दृष्टिकोणों को आकार देते है। भाषा के इसी महत्त्व को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में भी स्वीकारा गया है - ''भाषा व अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम अर्थ निर्माण और दूसरों के साथ बाँटने के आधार तैयार करते है साथ ही वे सांकेतिकता, वर्गीकरण स्मरण व दर्ज करने सम्बन्धी आधार भी बनाते हैं।'' (पृ. 30)

इसी तरह ब्रूनर का मानना है कि भाषा कभी भी 'उदासीन' नहीं होती। प्रायः शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त व क्रियाकलाप भाषा व अधिगम से ही सम्बन्धित होते है। फ्रेरे भी शिक्षा की भाषा को मानव दमन व मुक्ति के आधार के रूप में देखते है। भाषा अपनी प्रकृति एवं स्वरूप काफी हद तक उस समाज एवं संस्कृति से ग्रहण करती है जहाँ वह बोली व समझी जाती है उसका अपने समाज व संस्कृति से गहरा सम्बन्ध होता है और इस सम्बन्ध का सीधा प्रभाव समाज की विभिन्न संस्थाओं में विविध भाषाओं की स्थिति को प्रभावित करता है जिसके कारण कुछ भाषाएँ सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति व ज्ञान का प्रतीक बन जाती है और कुछ पिछड़ेपन का। इसका परिणाम यह होता है कि शिक्षा एवं प्रशासन का झुकाव जिन भाषाओं की और होता है वे भाषाएँ ही अधिक परिष्कृत एवं सभ्य मानी जाने लगती है एवं उनमें अर्जित ज्ञान को ही अधिक महत्त्व मिलता है - ''हमारी शिक्षा पद्धति कुछ लोगों की भाषा को स्वीकार करती है तो कुछ लोगों की भाषा को नकारती है। यह नकार शिक्षा पाने के उपकरण या ज्ञान प्राप्त करने के एकमात्र साधन का नकार हैं। हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा की नयी मशीनें

बनाना, नये शोध करना, अपने और समाज के बारे में नये ढंग से सोचना तभी संभव होगा जब हम अपनी भाषाओं में सोच पायेंगे ('समझ का माध्यम' 2010, पृ. 12)।

उच्चशिक्षा एवं भाषा का प्रश्न

भारतीय शिक्षा में भाषा का प्रश्न औपनिवेशिक काल से ही विचार का विषय रहा है। इसने भारत में शिक्षा नीतियों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है एवं समय-समय पर अलग विद्वानों ने विभिन्न आयोगों, रिपोर्टों एवं लेखों में इस विषय पर अपने-अपने मत रखे है जिनके आधार पर हमनें प्रारम्भिक व स्कूली शिक्षा में तो काफी हद तक भाषा के प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ लिया है लेकिन उच्चशिक्षा में इस विषय से सम्बन्धित कुछ मुद्दे आज भी महत्त्वपूर्ण है। आजादी से पूर्व व बाद में उच्चशिक्षा में माध्यम का मुद्दा एक प्रमुख मुद्दा रहा है। इसी कारण आजाद भारत में उच्चशिक्षा पर बने पहले कमीशन उच्चशिक्षा आयोग (1948-49) में भी इस प्रश्न को गंभीरता के साथ उठाया गया एवं राधाकृष्णन कमीशन ने धीरे-धीरे विश्वविद्यालय स्तर पर स्थानीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का सुझाव प्रस्तुत किया। इसके बाद कोठारी कमीशन (1964-66) में भी उच्चशिक्षा के स्तर पर माध्यम की समस्या को लेकर सुझाव प्रस्तुत किये गये -

''उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन और मूल्यांकन की समस्या अविच्द्धछेद रूप से शिक्षा और परीक्षा के माध्यम के साथ जुड़ी हुई है। हम यह पहले ही कह चुके है कि हमारे देश में शिक्षा के विकास के अंग रूप में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की दिशा में बड़ी मुस्तैदी से बढ़ना होगा'' (पृ. 331)।

हालांकि कमीशन प्रादेशिक भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा की भी उच्चशिक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका स्वीकार करता है एवं विशेष रूप से स्नातकोत्तर स्तर पर विद्यार्थियों की अंग्रेजी में प्रवीणता के लिए सुझाव देता है

''यह ठीक है कि हमारा लक्ष्य शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रादेशिक भाषाओं की प्रतिष्ठा करना है। पर इस बात पर भी जोर देना चाहेंगे कि इसका मतलब यह नहीं है कि अंग्रेजी को निरस्त कर दिया जाए। दरअसल एक महत्त्वपूर्ण 'पुस्तकालय भाषा' के रूप में उच्चतर शिक्षा में अंग्रेजी की प्राणप्रद भूमिका रहेगी (पृ. 331)।

उच्चशिक्षा में माध्यम एवं भाषा के प्रश्न को लेकर मुख्य रूप से दो पक्ष उभरते है। एक पक्ष का प्रमुख तर्क यह है कि चूँकि हमारी शिक्षा व्यवस्था में कालेज पूर्व शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होती है अतः उच्चशिक्षा का माध्यम भी उसी भाषा में होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी ने अपनी स्कूली शिक्षा ग्रहण की है। अपनी भाषा छोड़कर दूसरी भाषा में उच्चशिक्षा ग्रहण करना विद्यार्थी के लिए एकादमिक रूप से उचित नहीं होता है। इस तरह का बदलाव शिक्षा की गुणवत्ता को तो प्रभावित करता ही है, साथ ही विद्यार्थियों में चुप्पी की संस्कृति को भी बढ़ावा देता है।

एक विद्यार्थी के जीवन में स्कूल से कालेज जाना एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव होता है, कालेज में प्रवेश कर विद्यार्थी पाते है कि कालेज में स्कूल की अपेक्षा अधिक एकाग्रता एवं समझ की आवश्यकता होती है। ऐसी कठिन स्थिति में जब माध्यम में बदलाव की समस्या से उसका सामना होता है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि विद्यार्थी बाधा महसूस करे और पढ़ाई में उसकी रूचि कम हो जाए।'' (यूनिवर्सिटी न्यूज सप्लीमेंट, 1966)।

वहीं दूसरी और उच्चशिक्षा का माध्यम बदलकर प्रादेशिक भाषाएँ करने के विरुद्ध यह तर्क दिया जाता है कि उच्चशिक्षा का माध्यम केवल एक होना चाहिए क्योंकि क्षेत्रीय भाषाओं में उच्चशिक्षा देने से क्षेत्रियता भावना को बढ़ावा मिलेगा जिससे राष्ट्रीय एकता के प्रयासों को ठेस पहुँच सकती है। कर्वे (1967) के अनुसार यदि उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर सम्पूर्ण अध्यापन कार्य प्रादेशिक भाषाओं में कर दिया जायेगा तो आधुनिक देश के रूप में भारत की प्रगति की सभी आशाएँ एवं राष्ट्रीय एकता के नाम पर इसके क्षेत्रीय एवं भाषीय भिन्नताओं को दूर करने के सभी प्रयास नष्ट हो जायेंगे (पृ. 62)।

हालांकि उच्चशिक्षा पर विचार करने वाले अनेक विद्वानों का मानना है कि आधुनिक ज्ञान एवं बोध को भारतीय भाषाओं के माध्यम से भी विद्यार्थियों तक सम्प्रेषित किया जा सकता है। दास गुप्ता (1967) उच्चशिक्षा में शिक्षक के रूप में अपने लम्बे अनुभव का हवाला देते हुए कहते है कि

किसी भी विद्यार्थी की शिक्षा का माध्यम सभी स्तरों पर मातृभाषा होना चाहिए, वह भाषा जिसे वह स्वाभाविक व सहज रूप से बोलता है एवं जिसके माध्यम से उसने बचपन से दुनिया को देखा एवं समझा है। वे अपनी बात को सिद्ध करने के लिए तर्क देते है कि अगर उच्चशिक्षा के स्तर पर विद्यार्थी अपने समय व दिमाग का प्रयोग करेगा तो ज्ञान अर्जन के लिए वह बहुत कम समय निकाल पायेगा इसके विपरीत यदि उसकी भाषा में कोई सामग्री उसे प्रदान की जायेगी तो वह उसे न केवल मूर्त रूप में समझ सकेगा बल्कि अपने विचारों को सम्पूर्णता के साथ अभिव्यक्त भी कर सकेगा (पृ. 1254)।

वर्तमान समय में अंग्रेजी को उच्चशिक्षा का माध्यम बनाये रखने के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि यह एक वैश्विक भाषा है जो समस्त विश्व में फैली हुई है साथ ही यह नवीन तकनीक व संचार की भी भाषा है अतः इससे दूर नहीं रहा जा सकता अन्यथा प्रगति अवरुद्ध हो जायेगी। साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री का अभाव होना भी एक प्रमुख समस्या है (जयाराम 1993)। ऐसी ही कुछ चिंता हमें नेशनल नाॅलेज कमीशन की रिपोर्ट में भी दिखाई देती है - रिपोर्ट के अनुसार अंग्रेजी की समझ व पकड़ उच्चशिक्षा, रोजगार की संभावनाओं एवं सामाजिक अवसरों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। स्कूल के बाद अंग्रेजी भाषा का समुचित प्रशिक्षण प्राप्त किये बिना जो विद्यार्थी उच्चशिक्षा मे आते है वे सदैव उच्चशिक्षा में अक्षमता महसूस करते है। अधिकतर अध्यापन कार्य अंग्रेजी मे होता है और ऐसा न होने पर भी अधिकतर विषयों की किताबें एवं जर्नल केवल अंग्रेजी में उपलब्ध है, और जो छात्र पर्याप्त अंग्रेजी नहीं जानते वे हमारे प्रमुख शिक्षण संस्थानों में अपना स्थान बनाने में कठिनाई महसूस करते है और यह कठिनाई प्रोफेशनल एवं प्रतिष्ठित व्यवसायों में भी देखी जाती है।

वस्तुतः उपरोक्त विषय पर अलग-अलग कमीशन, रिपोर्ट व शिक्षाविदों के विचार जानने के बाद कहा जा सकता है कि शिक्षा में भाषा व माध्यम का मुद्दा आजादी से पूर्व व बाद में हमारे यहां का प्रमुख रहा है, जिसको समझने व सुलझाने के लिए अलग-अलग कमीशन, कमेटी व लोगों ने अलग-अलग समय पर अपने विचार प्रस्तुत किये है लेकिन भारत जैसे बहुभाषी देश में इसका कोई निश्चित हल ढूंढना आसान कार्य नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Altbach, Philip G. 'The Imperial Tongue: English as the dominating Academic Language', Economic and Political Weekly, 2007; 42(36):3608-11.
2. Dasgupta AK. The Language Problem. Economic and Political Weekly, 1967, 2(28).
3. Delpit, Lisa D. Education in Multicultural Society: Our Future Greatest Challenges. Journal of Negro Education, 1992: 61(3):237-249.
4. Jayaram N. The Language Question in Higher Education: Trends and Issue. Higher Education, 1993; 26(1):93-114, retrieved from http://ww.jstor.org/stable/3447879.
5. Karve DD. Universities and the Language Question. In A.B. Shah (eds.), Higher Education in India. Bombay: Lalvani Publishing House, 1967.
6. Linguistic Survey of India, 2011.
7. National Knowledge Commission, Report to the Nation : 2006-2009 available at : http://www.knowledgecommission.gov.in/downloads/repor209/eng/report09.pdf
8. NCERT National Curriculum Framework 2005, New Delhi : NCERT, 2005.
9. NCERT. Samajh Ka Madhyam. New Delhi: NCERT, 2010.
10. NCERT, Education and National Development, Report of Education Commission 1964-66, Vol.3, Higher Education, New Delhi, 1970.
11. Pandey N, Anshu Ashwin P. The Language of Knowledge?' A Case Study of English Medium Teaching in Delhi University, The Delhi University Journal of the Humanities and the Social Sciences. 2014; 1:77.
12. Shukla H. Communication in English: Problem Faced by Hindi Medium Student in Technical Institute, Language in India, 2004. 4 retrieved from www.language in india./com/June 2004/Problem Communication.html.